अंतरा-शब्दशक्ति

वो खूबसूरत है

एक कहानी

श्रीमति राजलक्ष्मी शिवहरे

वो खूबसूरत है

(कहानी)

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-24-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Wo Khubsurat hain' by 'Dr. rajlaxmi Shivhare'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

वो खूबसूरत है

(बंजारा मन)

वह बेहद ख़ूबसूरत थी। चाँद सी दुधिया लम्बी इकहरी देह। कुंतल जैसे जानबूझकर गालों पर बिखर जाते।

राम मेरी गड़रिया बना दे। खानी है मुझे।

तुझे खानी है तो तू बना ले। और यह गन्ना तू फिर जमींदार की हवेली से तोड़ लाई। देखेगा तो मुझे ही खा जायेगा। जाता हूँ वरना कुड़कुड़ करेगा।-

अरे खेत तो तेरा है। वो तो रमा की शादी में तुझे कर्ज लेना पड़ा और तू बंधुआ मजदूर बन गया।

तू सो रही थी।

माँ बाबा कितनी मेहनत करते हैं। हमारे पास भी बहुत सी जमीन होती तो कितना अच्छा होता।

तू आज राम से मिली थी।

हाँ।

तुझे कितनी बार समझाया वह ब्राम्हण है और हम कतिया फिर तू मानती क्यों नहीं।

अरे मैं क्या उससे शादी बना रही हूँ। अम्मा तुम भी ना, बस।

लोग देखते हैं तो बात बनाते हैं, बेटियों की माँ को सुनना पड़ता है।

मुझे नहीं खाना।

अरे, तभी बाबा आ गए

क्या हआ?

कुछ नहीं बात बात पर मुँह फूलाना तो इसकी आदत है। हाथ पैर धो लो।

देख तेरे लिए क्या लाया?

बाबा मेरा घाघरा चोली।

हाँ।

मेला पास है ना।

सबने खाना खाया और सो गए।

सुबह राम आया, करीमन दीदी को रोटी देने।

माँ ने आज पोई के भजिए बनाए हैं दादी खा लो गरम हैं।

खा लूँगी। जरा मेरी मटकी भर ला आज कुँए तक भी जा नहीं पाई।

तभी वहाँ जानकी आ गई। पानी मैं भर दूँगी, तू जा नौ बज रहे हैं।

तेरा जमींदार कुड़कुड़ करेगा।

राम ने जानकी को देखा जैसे उसने उसकी बड़ी सहायता कर दी हो।

पर लौटे तो हरी मटर लेते आना।

ठीक है ले आऊँगा।

करीमन दादी ने वजू किया और भजिए खाने लगी। दो बूँद आँसू टपक पड़े।

कभी डलिए भर कर भजिए खुद बनाती थी। बहुत पसन्द थे गुलाबो के अब्बु को।

और गुलाबो सारी सखियों को बटोर लाती।

अम्मा हमारी चोटी भी कर दो। माँ तो खेत चली गई।
मेरा क़ुछ ना था।
हिन्द मुसलमान भी कैसे मिलकर रहते।
पानी पीकर थोड़ी आशवस्त हुई तो कहा अम्मा एक बार देखने को बड़ा मन हो रहा था। कितने साल हए।
तू अकेली और अफजल मियाँ कहाँ है?
उनके इन्तकाल को तीन साल हुए अम्मा। अब तो फ़ज़ल ही सब काम सम्भालते हैं।
हाँ गोद में लेकर गई थी।
जब जानकी पानी भर कर लौटी तो देखा कोई महिला खड़ी है परछी में।
कौन हो?
क्या है?
अम्मा...
दादी को पूछ रही हो। तो बाहर क्यों खड़ी हो। भीतर आओ।
कोने में घड़ा रखा और दादी से बोली
कोई पूछ रहा है आपको।
मुझे कौन पूछेगा? मेरा है ही कौन, कहती वो परछी में आई।
कौन हो?
आँखें भी तो कमजोर हो गई हैं।
अम्मा कहकर वह गले लग कर रो पड़ी। -
गुलाबो तू -,..खैर तो है? बैठ।
जानकी पानी ला बुआ आई है।
गुड़ के साथ पानी लेकर जानकी आई।
अम्मा वहाँ जाने के बाद रजिया भी गोद में आ गई।
अब वह भी अपने मियाँ के साथ खैर से है।
दूध रखा है जानकी चाय बना ला।
नहीं अम्मा नहीं लूँगी।
कहकर अटैची उठाकर वह भीतर चली गई।
जानकी ने घर जाकर माँ को बताया कि गुलाबो की बुआ आई है तो वह हैरान रह गई।
सच में ईश्वर एक ही है।
मैं रोज यही प्रार्थना करती थी कि एक बार माँ बेटी मिल जाते।
माँ पाकिस्तान क्यों बना? सब हिल मिल कर नहीं रह सकते थे।
कितना खूनखराबा हआ सो अलग।
तू नहा ले। इतने में गुलाबो आपा से मिलकर आती हूँ।
गुलाबो नहाकर दहलान में बैठी चाय पी रही थी।
सरिता को देखकर गले लग गई।
जानकी बहत सुंदर है। वह बोल रही थी।
हाँ बस उसी की चिन्ता है। दीवाली बाद शादी कर दूँगी। सत्रह पार हो गई है।
सब कुछ जैसे ऊपर से निर्धारित था। आठवें दिन करीमन दादी बीमार पड़ी और खुदा को प्यारी हो गई।

अच्छा हआ पूरा गाँव यही कह रहा था माँ बेटी मिल तो लिए।
आप वापस चले जाओगे आपा सरिता ही ग़लाबो को खाना देती।
बच्चे तो वहाँ पर है यहाँ रहकर करना भी क्या। पर चालीसवाँ करके ही जाऊँगी।
राम ने बहत सहायता की है करीमन दादी की आप उसकी गाय उसे दे दो।
हाँ अम्मा इतने साल सभी के भरोसे तो रही है।
बुआ दादी ने गहने इस तरफ गड़ाए हैं। जानकी बोली तो सरिता उसे देखने लगी।
हाँ मैं ने ही तो गड़ाए हैं दादी थोड़े खोद सकती थी कहकर सरिता क़दाली से गडढा करने लगी।
एक हंडी में बहत सारे गहने थे। हमेल, पाजेब, करधन, तगड़ी, बाज़बंद, बेंदी।
आँखें छलक पड़ी। अम्मा ये सब पहनकर कितनी सुंदर लगती। अब्ब् तो देखते ही रह जाते।
ग़लाबो जमींदार के पास गई। और पूछा राम का कितना कर्जा बकाया है।
यही बस दस हजार।
आप इसमें से जितने भी गहने लेना चाहे ले लीजिए। उसके खेत के कागज मुझे दे दीजिए।
हाँ ठीक है। उसने हमेल उठा ली और बाकी गहने वापस कर दिए।
कागज लेकर वे राम के घर गई,....काकी राम कहाँ है।
आओ बीटिया खेत गया है। बहन का ब्याह किया तो अपने ही खेत में मजदूरी कर रहा है।
काकी ये लो पेपर कल से उसे मजदूरी नहीं करनी पड़ेगी।
पर हम नहीं ले सकते।
अच्छा काकी हम यहाँ होते तो रमा के ब्याह पर कुछ देते या नहीं।
उन्होंने गले लगा लिया ग़लाबो को।
घर हम जानकी को देकर जा रहे हैं। अम्मा तो हैं नहीं वो रो पड़ी।
जब भी तुम्हारा मन हो ये गाँव तुम्हारा है बिटिया।
ग़लाबो को लगा अम्मा की देखभाल उसे करनी चाहिए थी पर की गांव वालों ने तो उसका भी तो फर्ज बनता है।
ग़लाबो जब वापस आई तो अंधेरा होने लगा था।
अरे जानकी अंधेरे में क्यों बैठी है? दीया क्यों नहीं जलाया?
दरवाजा खोलते हए ग़लाबो बोली।
जैसे ही लालटेन जलाई तो वो जानकी को देखकर हैरान रह गई।
ये क्या है ? तेरी मांग में सिंदूर।
हाँ मैंने शादी कर ली।
शादी कर ली कब किससे?
राम से।
कौन मानेगा इस शादी को?
माँ को समझा देना बुआ । कल मुझे कोई देखने आने वाला है और मैं राम को अपना पति मान चुकी हूँ ।
वो ब्राह्मण है उसकी माँ कभी तुम्हें बहू नहीं मानेगी ।
राम ने शादी की तुमसे ।
वह डरपोक है। कभी मुँह से नहीं बोलता। वह तो उसके हाथ में सिंदूर की डिब्बी रखकर मैंने अपनी कसम डाली और सिंदूर लगवा लिया।
रात को जानकी को लेने माँ आई तो हैरत में रह गई।

अभी तक यहाँ क्या कर रही है?
इधर आओ बताती हँ।
जब ग़लाबो ने सारी बात बताई तो वह सर पकड़ कर बैठ गई।
मैं जानती थी आपा यह ऐसा ही कुछ करेगी। पर इसका बाप तो मुझे ही मार डालेगा।
जानकी घर चल।
माँ।
बस त़ चल।
वह घर लेकर आ गई।
त़ चाहती है तेरी शादी केवल राम से हो तो ये सिंदूर अपने हाथ से पोंछ ले।
माँ।
तेरा पति राम ही होगा। बस म़झे थोड़ा समय दे दे।
माँ जानकी को छोड़कर राम के घर गई।
त़मने ये क्या किया। राम बाहर ही मिल गया।
बहत पागल है। उसके एक हाथ में सिंदूर और एक हाथ में चूहे मारने वाली दवा थी। मैं क्या करता?
राम त़म किसी से क़छ बोलना नहीं। उसने हाथ जोड़ दिए थे।
काकी ये आप क्या कर रहे हो आप बड़े हो?
मेरी इज्जत त़म्हारे हाथ में है। तुम तो जानते हो तुम्हारे काका जानकी को बहुत प्यार करते हैं। त़म्हें ही दोष देंगे।
ग़लाबो चली गई थी। तीन दिन बीत च़के थे जानकी घर से बाहर नहीं निकली थी।
शाम को राम आया काकी उस समय वह दालान में बैठ कपास निकाल रही थी बीजों में से
आओ राम राम बहत देर से बैठा था। पर जानकी नहीं दिखी। उसकी पूछने की हिम्मत ना--
हई। वह उठकर चला गया।
दसरे दिन वह स़बह फिर आया। जानकी के पिताजी फेरी के लिए निकलने सी वाले थे।
आओ राम क़छ काम है।
काका आपसे ही बात करनी है।
तभी माँ बाहर आ गई।
देर हो जायेगी त़म्हें।
नहीं काकी। आप भी बैठो।
धीरे धीरे राम ने वो सारी बातें कह दी।
अब त़म क्या चाहते हो।
सबके सामने जानकी से शादी करना चाहता हँ।
त़म्हें जात से बाहर कर दिया जायेगा यह जानते हुए भी।
हाँ।
मैं जानकी को ब़लाता हँ।
जानकी सिर झ़काकर खड़ी थी।
मैंने शादी कर ली। म़झे पति का नाम चाहिए था। जैसे मीरा ने क़ष्ण को पति मान लिया था।
त़मने म़झसे शादी नहीं की तुम स्वतंत्र हो कहकर जानकी अन्दर चली गई।
राम चला गया।

राम बेटा जानकी हफ्ते भर से आई नहीं।
पूरे घर में ढिग लगाकर लीपना है कल पूर्णिमा है। जरा बुला कर ले आ।
बड़ी माँ मैं आ गई हूँ। कहकर सहन में गोबर की टोकरी उसने रख दी।
चूना मैंने फूला दिया है।
मैं खेत तक जा रहा हूँ।
अरे कलेवा तो कर ले।
अभी भूख नहीं कहकर वह चला गया।
अजीब है सुबह से कुछ खाया भी नहीं।
अम्मा एकदम गोरी। इस उम्र में भी बहत सुंदर। गुलाबी साड़ी से सिर ढँका हुआ।
गुलाबो बड़ी भली निकली राम का कर्ज पूरा चुका दिया।
सुना तुझे घर दे गई।
हाँ बड़ी माँ। कल बाड़ी साफ की है। माँ उसमें सब्जियाँ लगाने वाली है।
जानकी ढिग लगाकर सहन लीप रही थी।
बड़ी माँ और कुछ काम हो तो।
हाँ वो गेहूँ थोड़े साफ कर देती तो।
कर देती हूँ कहकर वो बोरी से गेहूँ निकालने लगी।
मैंने सुना तुने शादी कर ली।
वह हैरत से उन्हें देखने लगी।
नहीं राम ने कुछ बताया नहीं। वह तो तेरी माँ राम को सौगंध दे रही थी किसी से कुछ कहना नहीं।
इसके बाद भी आप मुझे बुलाने भेज रही थीं।
हाँ क्यों नही भेजना था?
बड़ी माँ मेरी शादी माँ और कर रही थी बस नादानी में वो सब हो गया।
तो क्या तुम अब कहीं और शादी कर लोगी?
नहीं। पर बाबू ने कहा है कि लड़की घर की इज्जत होती है। वो विष खा लेंगे।
जैसे तुम खा रही थी।
बड़ी माँ।
हाँ राम ने तुम्हारी माँ से कहा था मैं करता भी क्या ?
बड़ी माँ आप तो सब जानती हैं।
अब क्या होगा?
कुछ नहीं। आप उनकी शादी कर दो।
जानकी ने गोबर की टोकरी उठाई और हाथ पैर धोने तलाब पर आई।
देखा राम तलाब की पार पर बैठा है।
इतनी देर क्यों लगाई?
तुम खेत नहीं गए?
नहीं।
मैं नहीं जानती थी मेरी एक हरकत से सब परेशान हो जायेंगे।
क्या हआ?
बड़ी माँ ने तुम्हारी और माँ की सब बातें सुन ली।

मुझे समझ में आ गया था। वो मुझे बार बार शादी के लिए कह रही हैं।
तो कर लो ना।
और तेरा क्या ?
कुछ नहीं। मैं अम्मा बाबू के साथ ही रहूंगी। तेरे साथ मेरा कोई संबंध नहीं।
क्या बोल रही है?
सच बोल रही हूँ। बता उनके पास कोई बेटा है? यदि मैं चली गई तो उनका क्या होगा?
राम सिर पकड़कर बैठ गया।
ठीक है। जाता हूँ। कहकर वह चला गया।
पाँच साल बीत गए। ना तो राम ने शादी की ना माँ ने जिद की।
एक दिन सुबह सुबह राम आया,...माँ उठ नहीं पा रही काकी।
माँ ने जानकी को भेज दिया।
मैं डाक्टर लेकर आता हूँ। तू घर जा।
जानकी ने देखा साड़ी खराब हुई है। सो तसले में पानी लाकर सफाई की दूसरी साड़ी पहनाई।
तभी सांकल खड़की,..
खोल रही हूँ ।
उसने बड़ी माँ को सहारा देकर लिटाया।
फालिज है। इंजेक्शन के लिए जरा गर्म पानी ला दो ।
पाली ला गरम चाहिए।
मैं। नहीं बड़ी माँ ने मेरे हाथ का छुआ पानी नहीं पिया।
जानकी सोचने का समय नहीं है।
करती हूँ।
सुबह से ही उठने की कोशिश कर रही थी पर नहीं उठ पाई।
राम परेशान सा बैठा था।
रसोई के बरतन समेट कर जानकी ने घर झाड़ा।
माँ को भेजती हूँ। इतने तुम बड़ी माँ के पास बैठ जाओ।
काकी राम जानकी के गले से लगकर रो पड़ा।
कुछ नहीं होगा। परेशान मत होओ।
मैं खाना भेजती हूँ तुम्हारे लिए।
पुड़ी सब्जी।
नहीं काकी मैं खिचड़ी बना लूँगा। माँ को भी तो दवाई खिलानी है।
मैं अंधेरे में थी उन लोगों ने मुझे देखा नहीं। राम को नहीं पता कि मैं सब जानती हूँ।
अब मैं जाऊँ।
कुछ खायेगी नहीं वैसे तो लड़ लड़ कर खाती थी।
मैं इतने दिनों में बहत बड़ी हो गई हूँ। बड़ी माँ तीन दिन से बस थोड़ा ही कुछ खा पा रही हूँ।
ऐसे तो तू बीमार हो जायेगी।
नहीं। मरूँगी नहीं।
ये पैसे रख ले।
नहीं बड़ी माँ -
अरे पहले तो पाँच रूपए भी तुझे कम लगते थे।

अब पैसों का करूँगी भी क्या? पहले तो चूड़ी रिबन फूँदना सभी खरीदना होता था।
सौ रूपए थे।
इतने हाँ। और अब सिर ढाँक कर चला कर ऐसा।
बड़ी माँ आप भी।
सुन,मैं तो आज ही तुझे घर में रख लेती पर समाज से डर लगता है। उन्होंने जानकी को गले से लगा लिया।
एक हफ्ते जानकी ने माँ की दिल से सेवा की बस रात को वो घर जाती।
रात में सरिता रहती। रमा आई पर उसके बच्चे छोटे थे, दो दिन रूक कर चली गई।
सरिता बेटी पच्चीस की हो रही है। शादी कर दे।
सुनती नहीं जीजी तो क्या करें।
राम भी शादी नहीं कर रहा। आज तुम लोग न होते तो मेरा क्या होता।
ऐसे मत बोलो ऊपर वाले को सबकी खबर है।
मैं सोच रही थी मेरे बचपन के कंगन हैं ,तुम कहो तो जानकी को दे दूँ। निशानी रहेगी उसके पास मेरी।
जीजी बिलकल नहीं। आप पर कोई एहसान नहीं कर रहे। जैसे मेरी वैसे आपकी बेटी।
बेटी नहीं रे सरिता मन से मान चुकी हूँ बहू उसे।
सरिता रो पड़ी।
जीजी आप बहत बड़ी दिल की हो पर जानकी के बाब् ने कहा वो विष खा लेंगे बस इसी खातिर चुप हैं। राम जैसा बच्चा चिराग लेकर भी ढूँढे तो नहीं मिलेगा।
दोनों ने अपने दिल हल्के किए तभी जानकी आ गई।
उसके चुन्नी के छोर में टमाटर थे।
बड़ी माँ को चटनी पसंद है।
शाम हो रही है। घर जाती हूँ।
खाना बनाना है।
रात में आ जाऊँगी।
अब तो मैं चलती हँ। सरिता तु भी मत आना। मेरे कारण तू सो भी नहीं पाती।
नहीं जीजी आठ दिन बस फिर आप ठीक हो जाओगे।
जा अम्मा को बोल देना बुआ आ गई है। अब काऊनो फिकर नहीं है।
बड़ी माँ परात में आटा रख दी हूँ। सब्जी कतर के रख दी हूँ। सब्जी कतर के रख दी हूँ। चावल दाल भी रख दी हँ।
ठीक है अब तुम जाओ।
वह जा रही थी कि देखा राम खड़ा है।
तुम खेत ना जाओ हम चले जायेंगे।
जानकी बुआ का स्वभाव अच्छा नहीं। तु मत आना वरना तुझे भी कुछ सुना देंगीं
तुम क्यों परेशान हो रहे हो। बड़ी माँ को छोड़ दें। कितना कहा ब्याह कर लो पर नहीं।
हमारा ब्याह हो गया कोई माने चाहे ना माने।
अग्नि के फेरे लिए हो काले मोती बाँधे हो गले में। ब्याह हो गया।
घर जाओ नाहीं तो हमसे बुरा कोई ना होगा।
जा रहे हैं राम ने कहा।

तभी वहाँ कोटवार काका आ गए।
कैसी है अम्मा?
हम समझा रहे हैं घर जाओं इन्हें बुखार है।
चलो हमारे साथ भौजी को हमें भी तो देखना है।
जानकी खेत से चने लाना तो घर पर दे आना हरे चने की सब्जी
काकी के हाथ की बहत दिनों से नहीं खाई।
दूसरे दिन जानकी आई तो देखा राम अभी तक सो रहा है, बड़ी माँ भी बिस्तर पर बैठी थी।
क्या हआ? राम को छू कर देखा बुखार है। बड़ी माँ अब।
डाक्टर को ले आ नहीं तो वो शहर चले जायेंगे। वो आए तो कहा खून की जाँच करनी होगी।
कहीं मलेरिया ना हो। एक गोली दी कहा बुखार बढ़ेगा नहीं। अब क्या होगा, तभी बरामदे से
आवाज आई
रामदुलारी -
अरे जीजीया आओ।
जा लोटे में पानी देकर आ।
पैर धोकर भीतर आई -
क्या हआ है तुझे? कल राधेश्याम आए तो पता चला।
सुबह ही बस में बैठकर आ गए।
आज तो राम भी बिस्तर आ गए।
हमारी सेवा करते करते थक गए। ये कौन है?
ये सरिता की बीटिया है। वो कतियान की।
तब जानकी रात के बर्तन साफ कर रही थी। तभी राम उठे।
उन्होंने बुआ के पैर छुए। दूध लगाया चाय बनाई। जानकी ने घर साफ किया। हम जायें बड़ी
माँ।
हाँ कोटवार काका।
काका नीले रंग का कुर्ता और सफेद धोती पहने थे। पैर में मोटे चमड़े की चप्पल थी और सिर
पर टोपी।
हाथ में डंडा था।
आज एक मुनादी करनी है राम।
जी सचिव भैया तलाब की सफाई करवाने को बोले पर काम शुरू नहीं हुआ।
बारिश से पहले जरूर ही सफाई हो जाए तो बारिश में पानी भर जाए।
वरना गर्मी में बड़ी आफत होई।
राम राम भौजी। राम राम भैया।
भौजी तबियत कैसी है। उनके आँसू भर गए। अब समय मिला।
हम आज ही आए हैं। शहर में पार्वती के पास थे। दामाद ट्रेनिंग में भोपाल गए थे।
कैसी है। साथ नहीं लाए। अगले महीने आयेगी।
सबकी शादी हो गई। भौजी राम की भी कर दो।
तभी बुआ बाहर आ गई।
तुम कब आई?
सुबह हम भी रामदुलारी को अभी यही समझा रहे थे।

राम अब पच्चीस के हो गए है।
जब लगन आयेगी तभी हो जायेगी।
चाय बना लो बुआ।
अभी लाते हैं। हम तो भूल ही गए।
हम नहा लेते हैं। पूजा भी तो करनी है।
पूजा बुआ ने कर ली है। तुम कपड़े बदल लो बुखार है।
शाम को जानकी आई। बड़ी माँ
लाओ मालिश कर दूँ।
कर दे बुआ तो पड़ोस में मनिहरीन काकी के पास गई है।
उसने बड़ी माँ की चोटी की फिर मालिश की बरतन साफ किए।
झाड़ू लगाने गई तो देखा राम सो रहा है।
कुछ खाया है या नहीं। नहीं जी नहीं हआ।
माँ ने तेरे लिए राजगीरे के लड्डू भेजे हैं देख।
चुन्नी में बंधे लड्डू उसने दिखाए।
दे ना तो।
देती हूँ पर पहले एक गिलास दूध पीना होगा।
उसने एक गिलास दूध राम को दिया।
उसी में खाली कहकर उसने लडड़ दिए।
हाँ वो शादी के समय कौनसा मंत्र बोलते हैं -
मंगल भगवान विष्णुः, मंगलं गरूड़ध्वजः।
मंगलं पूरूषः पूराणः, त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।।
अरे अपनी शादी के समय तुने तो मंत्र बोले ही ना थे। बस इएलिए -
किसकी शादी,तभी वहां बुआ आ गई।
मैं राम की शादी की बात कर रही थी बुआ।
बताओं अब इनकी शादी होनी चाहिए या नहीं।
अरे तो तेरी भी तो होनी चाहिए कि नहीं।
इसे तो सब देखकर ही भाग जाते हैं बुआ।
अब भला तुम दोनों मुझे ही बनाने लगे।
अच्छी भली तो हैं।
भली कहाँ बुआ।पूरे गांव में घूमती फिरती है।
भला बताओं कोई ऐसे घूमता भी है। हाँ यह तो बात है।
बाईस साल की है बुआ बताओ ना काम की ना काजी की
सुबह से देख रही हूँ पूरा काम तो ये ही कर रही है।
बुआ तुम इसकी तारीफ कर रही हो।
और क्या जो देख रही हूँ तो करूंगी ही।
शाम को जब डाक्टर आए तो कहा तुम्हें मलेरिया है।
ये दवाई हे और सुनो ये कुछ फल हे ये जरूरी हैं।
माँ से पैसे लाकर दो राम जानकी से बोला तो चुन्नी के छोर में बंधे और बीस का नोट जानकी ने डाक्टर को दिया।

अरे राम मेरे छोटे भाई की तरह है कहकर बस उसने सौ का नोट ले लिया।
बुआ हैरत से देखती रह गई। फल भी लाकर दिए।
बुआ गाँव में मिलते नहीं है इसलिए।
लड़की तेरे पास इतने रूपए आए कहाँ से।
मैंने दिए थे माँ बोली।
हाँ और बीस रूपए कल बाबू ने कुल्फी खाने के लिए दिए थे।
बड़ी माँ अब जाऊँ वह राम को देख रही थी -,
जा पर सुबह जल्दी आना बुआ को जाना है।
इतनी जल्दी।
अरे हरिदवार जा रही हूँ। नहीं तो दो चार दिन रूक ही लेती।
आ जाऊँगी बड़ी माँ।
कितनी मेहनती है। देखो कैसे पैसे दे दिए।
कल मैं दे दूँगी। आप कुछ बना लो जीजी।
ना रात में तो कुछ खाती नहीं।
दिया बाती कर लूँ कह कर वे हाथ पैर धोने लग गई।
में कल चली गई तो खाना कौन बनायेगा।
मैं बना लूँगी जीजी चिंता ना करो।
अरे भोजी शहर में कौन परहेज करे है। होटल में खा रहे कि नहीं। और तो और अब तो ब्याह भी दूसरी बिरादरी में हो रहे।
हाँ पता है। उस ठाकुर के बेटे ने तो मुसलमान लड़की ही ब्याह ली।
तो कल से तू जानकी से बनवा।
यह थक जायेगा इसे बुखार भी है।
बुआ चली गई। जानकी आई तो सारा काम किया। बड़ी माँ को नहलाया।
बड़ी माँ मैंने चौके में सारा इंतजाम कर दिया है। अब मैं जा रही हूँ।
राम तो बुआ को भिजवाने गया था लगता है खेत चला गया।
तू मेरे पास बैठ। मैं ही बनाती हूँ।
राम आया तो खाना बन चुका था। माँ आपने -
नहीं यह थी ना साथ मेरे बैठे बैठे बना ली।
आप जल जाओगे तो।
मैं नहीं खा रहा यह खाना।
अच्छा ठीक है कल से जानकी ही बनायेगी लल्ला नाराज मत हो।
शाम को जानकी की माँ।
लड्डू हैं राजगीर के तुम खा लेना और जीजी भी खा लेंगी।
काकी आज जानकी नहीं आई।
उसे बुखार चढ़ गया सो रही है।
देखो सबकी सेवा करते करते।
राम देख कर आ उसे।
नहीं अभी बाबू हैं घर में।
तो क्या।

पीना।
और त़।
ठीक है ले एक घ़ँट पी लेता हूँ।
अब मैं ये नहीं पी रही।
अच्छा द़सरी बना लाता हूँ।
तभी माँ आ गई।
अरे इसने अभी तक चाय नहीं पी।
वहीं तो काकी इसे गर्म करके भी दी।
जानकी ने राम को देखा और कप उठा कर गट पी गई।
यह हई ना बात। शाम को आता हूँ, काकी बोलकर वह चला गया।
बिस्क़ट कौन राम लाया।
हाँ माँ।
माँ मौसी के घर भेज दो।
यहाँ रहँगी तो राम कभी शादी नहीं करेगा।
हम और त़म कब तक उनकी देखभाल करेंगे।
पहले ठीक हो जा। फिर बाब़ से बोलती हँ।
नहीं माँ त़म कल ही म़झे छोड़ कर आओ।
द़सरे दिन जब राम आया तो बाबू बाहर बैठे थे।
काकी कहाँ है?
वह स़बह स़बह मौसी के घर चले गए। पाँच कोस है।
ब़खार था जानकी को। फिर भी।
उसकी ने जिद की।
राम समझ गया वह उससे दर चली गई है।
दो दिन बाद सरिता आ गई पर जानकी नहीं आई।
राम बावरा सा हो गया। जब तक सामने थी उसकी कदर न की।
यह मन कैसा है बारबार उसकी को क्यों सोचता है।
स़बह स़बह वह जानकी के घर गया।
काका सामने बैठे दात़न कर रहे थे।
काका जानकी आई?
नहीं । कल शाम को उसकी माँ आ गई।
काका फेरी पर जाओगे क्या?
आज मन नहीं है।
मैं साइकिल ले जाऊँ। दोपहर तक आ जाऊँगा।
ले जाओ?
काकी को माँ के पास भेज देना काका कहकर उसने उसारी से साइकिल उठाई।
जब बम्हनी पहँचा नौ बज रहे थे।
रास्ते में देब़ मिला। जानकी का मौसेरा भाई।
अरे पंडित स़बह स़बह सब ठीक तो है।
हाँ कहकर वह साइकिल से उतर गया।

कहाँ खेत जा रहे हो।
हाँ। शादी हो गई है दो बच्चे भी हैं। काम तो करना ही पड़ेगा।
तुम घर पहँचो मैं आता हँ।
राम और देबू हम उम्र थे।
जब राम घर पहँचा देबू की बेटी बाहर खेल रही थी।
जीजी जीजी कोई आया है?
अरे बह पड़ी साग बना ले।
मौसी नहाया भी नहीं।
बस जानकी को बुखार था उसकी दवाई मेरे पास थी वही देने आया था।
अब जाता हँ।
बिना पूजन के तो पानी भी नहीं पीता कहकर राम वापस लौट गया।
जानकी बाहर आई।
तुम यहाँ?
तुने तो शादी नहीं की थी कि काका काकी से दर नहीं जाना।
कौन है जानकी बो -लती बोलती देबू की पत्नी बाहर आई।
हमारे गाँव के हैं भौजी।
तो बिठाओ ना। उसकी गोद में छोटा बच्चा था।
हम पानी ले आते हैं।
भौजी पानी हम ले आते हैं।
कहकर जानकी भीतर चली गई।
तभी मौसी गाय का चारा लेकर आ गई।
राम आए हो।
बैठो।
कितना सोना है अभी तक शादी नहीं की। मौसी राम को जाते देखती रह गई।
दवाई ले ले बिन्ना। खटिया पर दवाई पड़ी थी।
दो दिन बीत गए। शाम के समय राम फिर बम्हमनी पहँच गया।
वह एक पेड़ के नीचे खड़ा ओट से मौसी के घर की ओर देख रहा था।
तभी जानकी बाहर आई और उसने देख लिया कि राम खड़ा ह ।
क्या है ?
बाहर आओ कहकर राम ने बुलाया।
तुम्हारी तबियत कैसी है?
अच्छी है।
फिर वापस चलो।
क्यों?
वहाँ बाबू को अच्छा नहीं लगता मैं तुम्हारे घर आती हूँ तो।
मत आना ना । वहाँ सामने तो रहती हो।
कल आ जाऊँगी । अब तुम जाओ।
सच बोल रही हो ना?
किसी से झूठ बोलना मेरी आदत नहीं।

जब वह वापस आई तो भौजी ने कहा कहाँ चली गई थी-?
कहीं नहीं भौजी।
राम लौट आया तो देखा काकी घर लीप रही थी।
कैसी है बेटा जानकी।
दवाई दे आया हँ।
नहा ले खिचड़ी बनी है माँ बोली थी।
नहाने के बाद उसने खिचड़ी खाई और खेत चला गया।
गेहँ कटने को तैयार थे।
तभी एक दिन बेहद धंध छटी ओले गिरे।
गरीब को क्यों मार रहे हो बाबा राम ने आसमान को देखा।
कई लोगों के चने कट कर खलिहान में पड़े थे।
काले हो जायेंगे चने।
किसान कितना सहता है। एक तो सरकार ओने पौने मूल्य निर्धारित करती है।
तभी गाँव के सब लोग राम के पास आए।
राम भैया हम सरकार को मुआवजे के लिए आवेदन पत्र देने जा रहे हैं। कल दस बजे तैयार रहना।
मैं नहीं जा पाऊँगा। माँ की तबियत अच्छी नहीं।
मैं हस्ताक्षर कर देता हँ।
जीजी कल जो आए थे उन्हीं से बात कर रही थी।
क्या सही है?
हाँ माँ ने बलाया है।
दसरे दिन मौसी के साथ वह घर आ गई।
बेटी भगवान सबको दे माँ ने जानकी को गले से लगा लिया। यह नहीं थी तो घर जैसे खाने को दौड़ता था। दो दिन रूककर मौसी वापस चली गई।
बड़ी माँ तम्हें पछ रही थीं। शाम को माँ बोली।
कल जाऊँगी। मैं करीमन दादी की बाड़ी से हरी मिर्च तोड़ लाऊँ। आज पकोड़े खाने को मन हो रहा है।
हरी धनिया भी लेती आना। त गई तब से कछ बनाया भी नहीं।
वह चाबी लेकर गई तो देखा राम उसारी में बैठा था। तू यहाँ मैं तो डर ही गई।
राम ने उसके मंह पर हाथ रख दिया।
क्या करते हो?
त आज चप रहेगी।
मैं बोलूँगा।
क्या बोलोगे?
मैं तेरे बिना नहीं रह सकता। मुझे तो पता है। मुझे परेशान मत कर जानकी।
मझे भी तो माँ बनना है।
क्या ?
हाँ तेरे बच्चों की माँ। भौजी जैसे मेरी भी तो इच्छा है। क्या मैं ऐसे ही मर जाऊँगी।
जानकी मैंने तो केवल अपने बारे में सोचा। तेरी भी कुछ इच्छा होगी यह तो सोचा ही नहीं।

आज रात को हम यहीं मिलेंगे ठीक?
हाँ।
और तीन महीने के बाद जानकी को लगा वह माँ बनने वाली है।
बड़ी माँ ।
क्या जानकी। तेरे चेहरे का तेज बताता है।
हाँ तुम दादी बनने वाली हो।
कल हम तीनों हरिद्वार चलेंगे। वहाँ मेरी सहेली है
ठीक।
बिना माँ से बोले?
हाँ।
और हरिदवार में राम के साथ जानकी पहँची तो गंगा को देखकर हैरान हो गई।
इतना चौड़ा पाट और थोड़ी दूर पर एक हवेलीनुमा घर। छोटी छोटी कोठरियाँ बनी हुई।
आप तो कह रही थीं आपकी सहेली का घर है।
अरे नहीं बेटा एक बार तुम्हारे पिता मुझे यहाँ लेकर आए थे। पांच रूपए में कोठरी ली थी।
अब हम यहीं रहेंगे।
माँ तुम भी।
हाँ,..
और नौ महीने के बाद जानकी को बहत प्यारी सी बेटी हई।
कैसा होता है यह बंजारा मन। और और की लालसा। और एक दिन राम की माँ ने गंगा किनारे देह त्याग दी। अब हम गाँव लौट चलें। यहाँ मन नहीं लगता। दूसरे दिन राम काकी से मिलने आया।
सरिता बहत खुश हई।
बेटी हई है....काकी...
और जीजी
अब नहीं.....
कल आते हैं लिवाने।
दसरे दिन माँ लिवा लाई। जानकी और नन्ही कर्मा को। राम बहत परेशान था। रमा के कारण उसे जाति में विवाह करना पड़ा। जानकी का दर्द। बंजारा मन लेकर हरिद्वार में माँ और पिता जी के साथ रही रही थी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती राजलक्ष्मी शिवहरे

जन्म - 22 फरवरी 1949, गोंदिया (महाराष्ट्र)

माता - स्व.श्रीमती चन्द्रकला गुप्ता

पिता - स्व.श्री शशि कुमार गुप्ता (एडवोकेट)

शिक्षा - मैट्रिक एवं विद्यालयीन शिक्षा, गोंदिया (महा.)

पता - सी-13, एच.आई.जी. धनवन्तरी नगर, जबलपुर (म.प्र.)

संपर्क नं. - 0761-2674004, मो. 9425154961

पद
1. सदस्य - हिन्दी सलाहकार समिति (राजभाषा), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार (नई दिल्ली)
2. सदस्य - रोटरी क्लब, मिड टाउन, जबलपुर
3. आजीवन सदस्य - 1. हिन्दी प्रकारिणी समिति, जिला छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
   2. मध्यप्रदेश लेखक/लेखिका संघ, भोपाल (म.प्र.)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-24-7

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com